इसी तरह कैम्पबेल बे शोम्पेन आदिम जनजातियों को भी सभी जरूरी सुविधाएं हालांकि मुहैया कराई जा रही है, पर शर्मिले स्वभाव और बाहरी लोगों से ज्यादा मेलजोल पंसद नहीं करने वाले ये अभी भी अपने ही दुनिया के जंगली महौल में रहना पसंद करते हैं।

आधुनिक मानवों के साथ आदिम जनजाति के ये कबीलो भले ही आकर मिल गए हों, पर जंगली अंचल में स्वछंद घूमने और अपने परम्परागत जीवनशैली का सुख क्या वे भूल सकें हैं? अपनी धरती पर अपना वर्चस्व रखने वाले ये अपने आप को नई दुनिया के नए लोगों से घिरे क्या सुरक्षित महसूस कर रहे हैं? आधुनिक समाज में रहते, समय के साथ आखिर क्यों उनकी संख्या कम होती जा रही है? क्या अपनी जाति को नष्ट होने की कग़ार पर जाते देख उनके मन में कोई सवाल पैदा नहीं होता होगा? आदिम युग में रहते आए ये लोग अपने अस्तिव की रक्षा के लिए आखिर अपने आप को क्यों लाचार पा रहे हैं? क्या आधुनिक दुनिया में कदम रखने के साथ ही वे अपना सुख चैन अपनी पिछली दुनिया में छोड़ आए हैं? अगर ऐसा है! तो उनके अंदर उठने वाली बेचैनी उनके जीवन पर जरूर प्रभाव ड़ाल रही होगी। इसका दोषी क्या वे हमें समझ रहे हैं? इससे इनके अंदर किसी कुंठा, दुविधा या आक्रोष ने जन्म ले लिया है? अगर ऐसा है तो हमें इस पर ध्यान देना होगा। तब ही हम इन आदिवासियों के साथ शांतिपूर्ण सहअस्तित्व बनाए रख पाने में सफल हो पांएगे। चूंकि नई दुनिया के महौल के प्रति हर आदिम जनजाति के कबीलों की प्रतिक्रिया अलग–अलग रही होगी। क्योंकि हर कबीले की अपनी जीवनशैली रही है। ऐसे में उनके जीवन से जुड़े पहलुओं का गहराई से अध्ययन कर यथोचित उपाय करते हुए उन्हें आधुनिकता की मुख्य धारा में शामिल करना होगा। इसके लिए कबीला विशेष के लोगों की मानसिकता के साथ उनका स्वभाव, व्यवहार, पसंद–नपसंद, रहन–सहन, खान–पान, स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएं आदि